INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 13 | ISSUE - 10 | NOVEMBER - 2023

भारतीय भाषा एवं संस्कृति- भूमंडलीकरण के परिप्रेक्ष्य में।

डॉ. पूनम यादव
असिस्टेंट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग ,
मदन मोहन मालवीय पी.जी.कॉलेज भाटपार रानी, देवरिया.

सारांश-

किसी भी राष्ट्र की संस्कृति और अस्मिता की पहचान उसकी अपनी भाषा से होती है विश्व में वही राष्ट्र प्रतिष्ठा और सम्मान का पात्र होता है जिसे अपनी भाषा, संस्कृति और संस्कारों पर गर्व होता है हम अपनी भाषा के माध्यम से ही अपने साहित्य सभ्यता तथा संगीत से परिचित हो सकते हैं । संसार की अनेक भाषाओं की जननी संस्कृत है, हिंदी इसी संस्कृत का तद्भव रूप है अर्थात संस्कृत भाषा अपभ्रंश की गलियों से गुजरती हुई आधुनिक हिंदी बनी . भाषा के रूप में हिंदी में न केवल संस्कृत से और यूरोपीय भाषा परिवार से तथा पर्शियन भाषा से बल्कि भारतीय देशी भाषाओं से भी ऊर्जा का संचार होता रहा है. और यह भाषाएं हिंदी को सामर्थ प्रदान करती रही हैं ,जो हिन्दी की विशेषता है,

आज का समय भूमंडलीकरण का है जिसका असली चेहरा बाजार के रूप में हमारे सामने उपस्थित हुआ है. तेजी से फैलती बाजार संस्कृति ने हमारी राष्ट्रीय अस्मिता ,खान पान ,पहनावा ,भाषा संस्कृति को प्रभावित किया है . मनुष्य की अस्मिता सुरक्षित रखने के लिए भाषा एक सशक्त माध्यम है आज दुनिया में लगभग साठ हजार भाषाएं बोली जाती है लेकिन आने वाले समय में नब्बे प्रतिशत से अधिक का अस्तित्व खतरे में है। भाषाओ के इस विलुप्तिकरण दौर में हिन्दी न केवल अपने को बचाने में सफल रही है बल्कि उसका उपयोग-अनुप्रयोग निरंतर बढ़ता जा रहा है।

कीवर्ड -भूमंडलीकरण, संस्कृति ,प्राथमिकता, विरासत, आयातित, वैश्वीकरण, राष्ट्रीयता, उपभोक्तावाद,राष्ट्रभाषा

प्रस्तावना-

भूमंडलीकरण के दौर में पश्चिम से आयातित भाषा और संस्कृति का जिस तेजी से विस्तार हुआ है उसे भारतीय भाषा और संस्कृति के समक्ष अस्तित्व का संकट उत्पन्न हो गया है। भौतिकता के प्रति आग्रह के कारण नैतिक मूल्यों में लोगों की आस्था कम हुई है । युगीन परिवेश के अनुरूप मानवीय संबंधों की

नवीन व्याख्या प्रस्तुत की जा रही है पश्चिम द्वारा अनुमोदित लिव इन रिलेशनशिप जैसे अनैतिक संबंधों को हाथों हाथ लिया जा रहा है । महानगरों में पाश्चात्य जीवन शैली के प्रति लोगों का बढ़ता मुंह चिंता का विषय बन गया है भारतीय भाषा और संस्कृति के भविष्य को लेकर तरह-तरह के कयास लगाए जा रहे हैं। भारतीय जीवन मूल्यों एवं आदर्श मुख्यधारा से अलग हटकर अपनी पहचान खो रहे हैं। उनके प्रति समाज में विशेषकर युवा वर्ग में उपेक्षा का भाव रोंगटे खड़े कर देता है। अपने ही देश में या स्वयं को उपेक्षित एवं वंचित महसूस कर रही है। गुलामी के दौर में भी अपनी स्वतंत्र पहचान कायम रखने के लिए इन्हें इतनी जद्दोजहद नहीं करनी पड़ी थी।इनके अस्तित्व पर संकट शायद ही कभी महसूस किया गया हो। अगर हम इतिहास को देखें तो पाते हैं कि संघर्ष हिंदी की नियति बन गई है। इन का संपूर्ण इतिहास इन्हीं चुनौतियों संघर्ष की घटनाओं से भरा पड़ा है। चुनौतियों से इस का चोली-दामन का संबंध रहा है लेकिन इन चुनौतियों का सामना कर वह आग में तप कर कुंदन की तरह हमेशा से बाहर आई है। गुलामी के दौर में भी हिंदी भाषा और संस्कृति को शासक वर्ग की घोर उपेक्षा का शिकार बनना पड़ा था। इसके अस्तित्व को समाप्त करने के लिए एकाधिक हथकंडे अपनाए गए। इन षड्यंत्रों से आहत हुए बिना वह अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करती रही। अंग्रेजी भाषा को उस पर तरजीह दी गई, तथा उसे जबरन लोगों पर थोपा गया एवं हिंदी भाषा के समानांतर उसकी सत्ता कायम करने का कुचक्र रचा गया। हिंदी को औसत भाषा का दर्जा प्रदान किया गया तथा अन्य भारतीय भाषाओं के विकास में बाधक बताकर इसके विरुद्ध खड़ा करने के लिए प्रोत्साहित किया गया।

इन सारे विरोधों के बावजूद हिंदी भाषा एवं संस्कृति के विकास की रफ्तार प्रभावित नहीं हुई। सच्चाई तो यह है कि उस दौर में हिंदी भाषा की जितनी प्रगति हुई, उसका प्रचार प्रसार हुआ, आजादी के बाद उसमें कमी आई है। कई विश्व हिंदी सम्मेलनों के सफल आयोजन के बावजूद विश्व की सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषाओं में शामिल हिंदी संयुक्त राष्ट्र की भाषा नहीं बन पाई। हिंदी को राजभाषा का दर्जा उसी दौर में प्राप्त हुआ महात्मा गांधी, पुरुषोत्तम दास टंडन, विनोबा भावे, रविंद्रनाथ टैगोर जैसे मनीषियों ने राष्ट्रभाषा के लिए अपेक्षित मापदंडों पर हिंदी को ही खराब आया तथा संपर्क भाषा के रूप में उसकी पुरजोर वकालत की। उस दौर में देश मेंराष्ट्रीयता की अलख जगाने हिंदी की निर्णायक भूमिका रही। हिंदी में प्रकाशित पत्र पत्रिकाओं उदंड मार्तंड ,अमृत बाजार पत्रिका, हरिजन एवं सरस्वती आदि में प्रकाशित लेखों ने हिंदी भाषा के अक्षयकोष की श्री वृद्धि की तथा उसे विश्व भाषा की समक्ष ला खड़ाकिया। हिंदी भाषा के विकासकासबसे बड़ा कारण भी संभवत यही रहा कि उसने शासक वर्ग की भाषा बनने की चेष्टा नहीं कि। आम आदमी की भाषा बनकर उसने न सिर्फ उसके दुख दर्द को बांटा बल्कि शासक वर्ग की डुरभिसधियों के विरुद्ध उसके विरोधी तेवर को स्वर प्रदान किया तथा उसे एक मंच पर लाने के लिए अशांत रसम किया कश्मीर से कन्याकुमारी एवं गुजरात से असम तक फैले विशालभौगोलिक भूखंड की वैचारिक गतिविधियों का वाहक बन कर उसने राष्ट्रीयता की बेल को पुष्पित एवं पल्लवित किया।

पिछले कुछ दशकों में संचार व तकनीकी के विस्तार के कारण संपूर्ण विश्व में भौगोलिक दूरियों का महत्व नहीं रह गया है जिसके प्रभाव से संपूर्ण विशव एक गांव के तुल्य माने जाने लगा हैं। इस प्रकार भूमंडलीकरण को बढ़ावा मिल रहा है। भूमंडलीकरण अथवा वैश्वीकरण से आशय हैं -'विश्व के सभी राष्ट्रों, वहां के निवासियों , कंपनियों आदि के मध्य जीवन के समस्त कार्य व्यापारों में पारस्परिक संवाद एवं आदान प्रदान की प्रक्रिया। इस प्रक्रिया का सीधा सरोकार अंतरराष्ट्रीय व्यापार, निवेश , सूचना प्रौद्योगिकी,कृषि

,उद्योग,पर्यावरण संस्कृति, राजनीति, आर्थिक विकास ,नागरिकों की समृद्धि, विभिन्न समुदायों की सामाजिक स्थिति और कल्याण योजनाओं के साथ-साथ भाषा से भी है । भूमंडलीकरण शब्द विश्व के लिए नया हो सकता है किंतु भारतीय संस्कृति में वैश्वीकरण की परंपरा अति प्राचीन काल से देखने को मिलती है। आज संपूर्ण विश्व को विश्व ग्राम (ग्लोबलाइजेशन)की दृष्टि से देखा जाता है। हमारे यहां उदार चरितानाम् तु वसुधैव कुटुंबकम्(महोपनिषद- खंड- 71-73)की परिकल्पना प्राचीन काल से चली आ रही है। भूमंडलीकरण सीधा बाजारवाद से जुड़ा है। बाजार का सीधा संबंध भाषा से है ।बाजार के विस्तार से भाषा का विस्तार हो रहा है वर्तमान समय में हिंदी जनमानस की भाषा होने के साथ-साथ बाजार की भाषा भी बन गई है।

वर्तमान समय में भूमंडलीकरण के दौर में एक बहस देखने को मिलती है। कुछ विद्वान मानते हैं कि भूमंडलीकरण और बाजारवाद के प्रभाव से हिंदी का विस्तार हुआ है किंतु कुछ विद्वान इस तर्क से असहमत नजर आते हैं लेकिन वास्तविकता यही है कि भूमंडलीकरण का सीधा प्रभाव हिंदी भाषा पर भी व्यापक रूप से पड़ा है हिंदी आज केवल भारत देश तक ही सीमित नहीं है बल्कि आज हिंदी का प्रयोग विश्व के लगभग सभी देशों में किया जा रहा है चीन जापान कोरिया जैसे देश जहां अपनी मातृभाषा के अतिरिक्त किसी भाषा को अहमियत नहीं देते हैं वहीं भारत में अपना व्यापार बढ़ाने के लिए यही देश हिंदी का बड़े स्तर प्रयोग करते हुए नजर आते हैं व्यापार विस्तार के उद्देश्य से विश्व में हिंदी भाषा जानने और समझने की होड़ मच गई है। यह भूमंडलीकरण का ही प्रभाव है कि गैर- हिंदी भाषी क्षेत्र में भी हिंदी भाषी लोग सिर्फ हिंदी में बात कर रहे हैं बल्कि हिंदी के विकास का प्रयास भी कर रहे हैं।

वास्तविकता यह है कि भूमंडलीकरण के दौर मे संपूर्ण विश्व में केवल व्यापार को बढ़ाने वाली भाषा की आवश्यकता है भाषा की लोकप्रियता उसकी उदारता पर निर्भर करती है। हिंदी भाषा में उदारता का गुण विद्यमान है। किसी अन्य भाषा के शब्द आत्मसात करने की क्षमता जितनी हिंदी में है उतनी विश्व की किसी अन्य भाषा में शायद ही होगी। चुकी भारतीय बाजार में प्राचीन काल से ही गैर हिंदी भाषी लोगों का आना-जाना रहा है इसलिए हिंदी भाषा लगातार विश्व की अन्य भाषाओं के संपर्क में रही है। वर्तमान समय में भी हिंदी आवश्यकतानुसार अंग्रेजी के शब्दों को भी अंगीकार कर रही है। हिंदी का भविष्य केवल संगोष्ठियों और अकादमिक गतिविधियों पर निर्भर नहीं है बल्कि उसकी निर्भरता खुले बाजार में मुक्त स्पर्धा पर आधारित है और स्पष्ट हो गया है कि भूमंडलीकरण, ग्लोबलाइजेशन ,वैश्वीकरण, उपभोक्तावाद, बाजारवाद और उदारीकरण के दौर में भी हिंदी भाषा में परिस्थितियों के अनुरूप ढलने की विशेष क्षमता है।

निष्कर्ष-

वैश्वीकरण के इस दौर में हिंदी भाषा अपने मूल स्वरूप को कितना और किस प्रकार सुरक्षित रख पाएगी यह एक विचारणीय प्रश्न है जिस प्रकार हिंदी वैश्विक स्तर पर लगातार विस्तार कर रही है उसी के समानांतर विश्व की अन्य भाषाएं (जिनमें अंग्रेजी प्रमुख है) हिंदी क्षेत्र में सेंध लगाकर हिंदी के मूल स्वरूप को विकृत कर रही है। अंग्रेजी के बहुत से शब्द हिंदी भाषी क्षेत्रों में इस प्रकार प्रयोग किए जाते हैं जैसे वह मूलतः हिंदी के ही शब्द हो। हिंदी के साथ अन्य भाषाओं के शब्दों का मिश्रित होना, हिंदी भाषा के शब्द कोष को भरने का काम अवश्य करता है लेकिन हिंदी भाषा के जिस शब्द के स्थान पर किसी अन्य भाषा का शब्द प्रयोग होने लगता है तब वह अन्य भाषा का शब्द हिंदी भाषा के शब्द को उपेक्षित बना देता है।

भूमंडलीकरण के इस दौर में जो देश सूचना प्रौद्योगिकी मे जितना सम्पन्न होगा वह उतना ही ज्यादा दुनिया पर राज करेगा। हिन्दी मे भी सूचना प्रौद्योगिकी को आत्मसात करने की क्षमता जितनी प्रवण होगी हम विश्व के साथ-साथ चलने मे निपुण होंगे। भूमंडलीकरण के इस दौर मे अपनी भाषा और संस्कृति के रूप को लचीला बनाते हुए उसके अनुसार ढालने की क्षमता विकसित करनी होगी ताकि विश्व मे अपने नेतृत्व का डंका बजा पाए। लेकिन यहाँ तक पहुचने के लिए अपने देश मे ही पहले इसे जन-जन की भाषा बनानी होगी विविधताओं का यह देश कई मुद्दों पर एक जुट होकर बहुत कुछ हासिल कर चुका हैं इसलिए यह मुद्दा भी जल्दी ही अपना मुकाम पा लेगा ऐसी उम्मीद रखनी चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची-

1. सचदेवा अनीता, वैश्वीकरण एवं हिंदी का विकास, नेशनल प्रिंटर्स नई दिल्ली, संस्करण 2017 पृष्ठ संख्या- 01
2. दीक्षित प्रो सूर्य प्रसाद, भूमंडलीकृत विश्व के बीच भारत और भारतीय भाषाएं(सं) शर्मा हर्षबाला, इक्कीसवीं सदी: औपनिवेशिक मानसिकता और भाषा अंतिका प्रकाशन, नई दिल्ली
3. निशा नंदिनी, भारतीय जादू सकारात्मक सोच का (लेख संग्रह) वर्जिन साहित्य पीठ नई दिल्ली प्रथम संस्करण 2018 पृष्ठ संख्या 66
4. कुमारी कमलेश, भूमंडलीकृत विश्व के बीच भारत और भारतीय भाषाएं व उनका साहित्य।
5. सिंह पुष्प पाल, भूमंडलीकृत और हिंदी उपन्यास ,राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली प्रथम संस्करण 2012 पृष्ठ संख्या- 141
6. उपाध्याय रमेश, भाषा और भूमंडलीकरण, शब्द संधान दिल्ली, संस्करण 2008 पृष्ठ संख्या -18